श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

मई - प्रथम ✲ अंक - 9

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

Address
Here

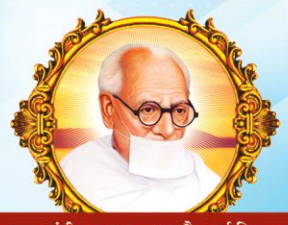

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

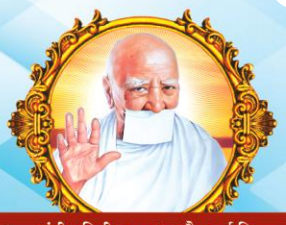

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

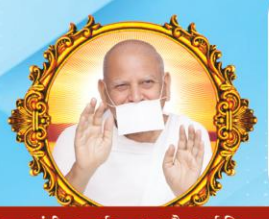

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष शुभारम्भ (1952 - 2026)

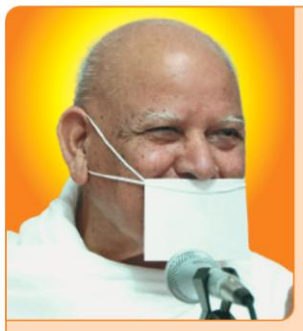

आत्म ध्यान से दृष्टि परिवर्तन

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

(गतांक से आगे)

आर्त ध्यान - मिथ्यात्व के अन्तर्गत भेद-विज्ञान के बिना अपने को जड़ मानना व जड़ की चिंता व चिंतन करना, इस दशा में जो भी क्रियाएं की जाती है, वह चाहे देह की हो या संसार की हो, कर्म बंधन का कारण होती है, इससे हमारा मिथ्यात्व और भारी होता है और बढ़ता जाता है।

रौद्र ध्यान - अपने को जड़ मानकर विभाव दशा में जाकर, अपना-पराया जिससे मोह बढ़ता है, राग-द्वेष होता है, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों की उत्पत्ति होती है, संसार बढ़ता है, इस प्रकार का ध्यान जैन दर्शन में त्यागने को कहा है। पंचमकाल में जो भी व्यक्तित्व के पोषण में लगे हैं उन्हें ये दो ध्यान से कर्म लग रहे हैं। अतः चतुर्विध संघ ध्यान देकर इन पुद्गलों के ध्यान को छोड़े व्यक्तित्व को गौण करें, तो आगे के ध्यान सहज होंगे।

धर्म ध्यान - व्यवहार सम्यक्त्व प्राप्त होने पर देव, गुरु, शास्त्र, धर्म पर श्रद्धा करने से अशुभ छूटता है और शुभ प्रारम्भ होता है। जिसमें जीव पाप से पुण्य की ओर मुड़ता है। जीव धर्म की क्रियाएं करता है, जिसमें नवकार जाप, आनुपूर्वी, सामायिक, संवर, पौषध, प्रतिक्रमण, तपस्या, स्वाध्याय आदि धर्मिक क्रियाएं करके जीव सन्तुष्ट होता है, इससे व्यक्ति अशुभ से शुभ की ओर मुड़ता है, पाप से पुण्य तो बढ़ता है, पुण्यानुबंधी पुण्य के उदय से उसके जीवन में मानवता, धर्म श्रवण प्राप्त होता है, वह धर्म को समय की सीमा में बांधता है, धर्म की क्रियाओं में धर्म मानता है, धर्म का चिंतन करता है, इससे भी मुक्ति नहीं है, शुभ कर्मों का बंधन चलता है।

शुक्ल ध्यान - जीवात्मा को अपने स्वयं का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। स्वयं पर श्रद्धा हो जाती है। स्वयं का चिंतन करते-करते स्वयं का चिंतन भी छूट जाता है। शून्य स्थिति आती है, जीव मन के पार चला जाता है, अपने जीव में एक-एक समय के लिए ठहरने लगता है और यह अवधि बढ़ती जाती है और अवधि बढ़ते-बढ़ते एक घड़ी तक शुक्ल ध्यान लग जाता है तो क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त हो जाती है। क्षायिक सम्यक्त्व से जीव अनादिकाल का मिथ्यात्व क्षय कर देता है, ऐसा जीव शीघ्र ही मोह कर्म को क्षय कर केवलज्ञान को प्राप्त कर अंतिम स्थिति निर्वाण को प्राप्त कर सिद्ध हो जाता है। शुक्ल ध्यान की शुरुआत भेद-विज्ञान से होती है, पूर्णता भी पूर्ण भेद होने पर केवलज्ञान व आयुष्य कर्म क्षय होने पर जीव निर्वाण को प्राप्त कर लेता है।

अरिहंत कृपा से प्राप्त आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में भाग लेकर चतुर्विध संघ धर्म ध्यान से शुक्ल ध्यान में पहुँचकर पंचम आरे में चतुर्थकाल की साधना को आत्मसात् करें। भरत क्षेत्र में रहकर यहाँ क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त कर, मोह कर्म को क्षय करता हुआ, 90 से 92 प्रतिशत तक का कार्य इस भव में करें एवं शेष मोह कर्म महाविदेह में क्षय करें, केवलज्ञान को प्राप्त करें और अपने चरम लक्ष्य सिद्धालय को यही हार्दिक मंगलकामना।

अध्यक्षीय

प्रेरणा के पावन प्रसंगों में संगठन का नवसंकल्प

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष
जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाजबंधुओं,

वर्तमान समय हमारे लिए अनेक प्रेरणादायी एवं पावन प्रसंगों से परिपूर्ण है। एक ओर जहाँ बुद्ध पूर्णिमा हमें करुणा, शांति और आत्मजागरण का संदेश देती है, वहीं मातृत्व दिवस हमें जीवन में संस्कार, त्याग और स्नेह की आधारशिला रखने वाली मातृशक्ति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

इसी क्रम में हमारे श्रमण संघीय परंपरा के अनेक महत्वपूर्ण अवसर भी इस अवधि में आ रहे हैं। आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. शिवमुनि जी म. का आचार्य पद चादर ग्रहण दिवस, उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म. का जन्म दिवस, प्रवर्तिनी डॉ. श्री चंदना जी म. का जन्म दिवस तथा प्रवर्तक श्री प्रकाश मुनि जी म. का दीक्षा दिवस-ये सभी प्रसंग हमें त्याग, संयम, साधना और समाज के प्रति समर्पण की प्रेरणा प्रदान करते हैं। इन महापुरुषों एवं पूज्य साध्वीवृंद का जीवन हमें यह सिखाता है कि अनुशासन, सेवा और साधना ही जीवन को सार्थक बनाते हैं।

इसी प्रेरणामयी वातावरण में श्री आल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की तीनों राष्ट्रीय सभाओं का सफल आयोजन भी हम सभी के लिए गर्व और संतोष का विषय है। यह आयोजन केवल बैठकें नहीं, बल्कि संगठन की सुदृढ़ता, सामूहिक विचार और भावी दिशा निर्धारण का महत्वपूर्ण आधार हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इन सभी पावन अवसरों से केवल भावनात्मक रूप से ही नहीं जुड़ें, बल्कि उनके मूल संदेशों को अपने जीवन और संगठनात्मक कार्यों में भी उतारें। संगठन तभी सशक्त बनता है जब उसके प्रत्येक सदस्य में कर्तव्यनिष्ठा, सहभागिता और समर्पण का भाव हो।

मैं समस्त पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों, युवा साथियों एवं मातृशक्ति से विशेष आग्रह करता हूँ कि वे संगठन के प्रत्येक कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाएँ। अपने-अपने क्षेत्रों में धर्म, सेवा और संगठन की भावना को सुदृढ़ करें तथा समाज को एक सूत्र में बाँधने का सतत् प्रयास करें।

आइए, इन सभी प्रेरणादायी प्रसंगों को आत्मसात करते हुए हम एक सशक्त, संगठित और संस्कारित समाज के निर्माण का संकल्प लें। आप सभी को इन समस्त पावन अवसरों की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सम्पादकीय

पांडुलिपि-संपदा और स्थानकवासी जैन समाज : आत्मसंरक्षण से राष्ट्रीय सहभागिता तक

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

स्थानकवासी जैन धर्म परंपरा अपनी अमूर्तिपूजक साधना की परंपरा, अनुशासन और शास्त्रीय आचरण के लिए विशिष्ट रही है। इस परंपरा की सबसे मूल्यवान धरोहर वे हस्तलिखित पांडुलिपियाँ हैं, जिन्हें सैकड़ो वर्ष पूर्व स्थानकवासी जैन समाज के साधु-साध्वियों ने अपनी तपश्चर्या और ज्ञान-साधना से सृजित किया। ये पांडुलिपियाँ केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परंपरा की जीवंत धरोहर हैं-जिनमें दर्शन, भाषा, इतिहास और संस्कृति का अद्वितीय संगम निहित है।

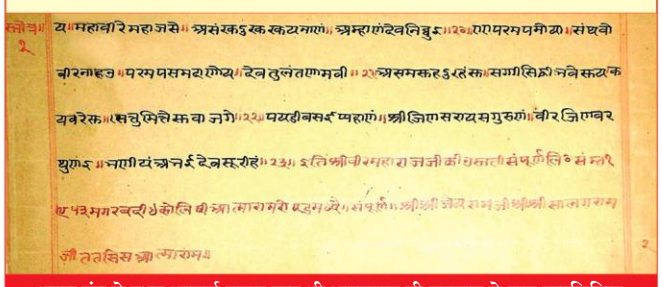

श्रमण संघ के प्रथम आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के द्वारा हस्तलिखित भगवान महावीर स्तुति पांडुलिपि का दुर्लभ पन्ना (पूज्य आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज की गुरु परंपरा का भी उल्लेख) लेखनकाल-विक्रम संवत् 1953, स्थान- रोपड़ पंजाब।

आज जब हम श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के 75वें अमृत महोत्सव वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, तब यह आवश्यक है कि हम अपनी इस अमूल्य विरासत के संरक्षण और प्रसार पर गंभीरतापूर्वक विचार करें। यह केवल भावनात्मक विषय नहीं, बल्कि दूरदर्शी नीति और ठोस कार्ययोजना की माँग करता है।

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार के Ministry of Culture द्वारा 'ज्ञान भारतम् योजना' के अंतर्गत देश की पांडुलिपि-संपदा के संरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रसार के लिए एक व्यापक पहल की घोषणा की गई है, जिसके लिए उल्लेखनीय बजट भी निर्धारित किया गया है। यह निःसंदेह एक ऐतिहासिक अवसर है, जो हमारी सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंच पर स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

किन्तु आत्ममंथन की आवश्यकता यहाँ भी है। पूर्व में भारत सरकार द्वारा संचालित की गई National Mission for Manuscripts जैसी योजनाओं में स्थानकवासी जैन समाज की भागीदारी अत्यंत नगण्य रही। यह स्थिति केवल संसाधनों की कमी का परिणाम नहीं, बल्कि जागरूकता और संगठनात्मक पहल की कमी को भी दर्शाती है। यदि इस बार भी हम निष्क्रिय रहे, तो यह अवसर पुनः हाथ से निकल सकता है। (शेष पृष्ठ 3 में)

M.J. Home Furnishing
Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet
Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric
Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal
Mob: 8053018933, 8727890101
E-mail: mjhome025@gmail.com
Vijay Jain
National Chairman - Jain Conference, New Delhi

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली	98111 67770
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहिल्यानगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वेध्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, बैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़वाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री वी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाविया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, छत्रपति संभाजीनगर	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदमु', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

प्रांतीय महामंत्री

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

वरिष्ठ मार्गदर्शक

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 72626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहिल्यानगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाविया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने
सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा
मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक
और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

कथा-कहानी

योगिराज की कहानियाँ -प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

परमात्मा कब मिलेगा ?

एक साधु था। वह जंगल में रह रहा था। एक बार उस साधु को जंगल में एक किसान मिला। किसान ने जंगल में साधु को देखा तो उसका मन प्रफुल्लित हो गया। वह साधु के नजदीक गया। नमस्कार किया और उनकी सानिध्य में बैठ गया। साधु उसकी ओर मुखातिब हुए तो वह विनम्र हो कहने लगा - महाराज! आप ज्ञानी और तपस्वी पुरुष हैं। आपने अवश्य ही श्रेष्ठ को पा लिया है। कृपा कर मुझ अभागे को भी परमात्मा के दर्शन करा दें। यह कहते-कहते वह अत्यंत भावुक हो आया। बोला - करुणाकर! मुझे कब परमात्मा के दर्शन होंगे? मेरा जीवन तो व्यर्थ ही बीतता चला जा रहा है।

साधु ने उत्तर दिया - भक्त! कल सुबह आ जाना यहीं, इसी वृक्ष के नीचे तुम्हारी इच्छा पूरी हो सकेगी। किसान उत्कृष्ट तपस्वी के आश्वासन से बहुत प्रसन्न हुआ। उसके मन का कण-कण खुशी में भीग गया।

अगले दिन की प्रातः दिन नहीं निकला उससे पहले ही वह वृक्ष के नीचे बैठे महात्मा के चरण भेंटने निकल पड़ा। सूर्योदय होते-होते वह पहुंचा। साधु वहीं मिले। अब तो उसका विश्वास और भी सघन हो गया। साधु सच्चा है वरना वहीं कैसे मिलता? ऐसा सोचने लगा।

संत ने भक्त किसान को देखते ही कहा - भक्त! आ जाओ मेरे पीछे-पीछे और देखो! इस गठरी को अपने सिर पर रख लेना। काफी वजनदार थी गठरी। किसान गठरी उठाकर साधु के पीछे-पीछे। किसान धीरे-धीरे पिछड़ने लगा।

साधु ने पीछे मुड़कर देखा। बोले - भक्त! कुछ कष्ट है? किसान बोला - महात्मा जी गठरी लेकर चल पाना कष्टप्रद लग रहा है। साधु ने कहा - तो भक्त ऐसा गठरी में महत्वपूर्ण कुछ नहीं है। (भक्त मन ही मन सोचने लगा जब इसमें महत्वपूर्ण कुछ नहीं है तो इसे सिर पर ढोने की क्या ज़रूरत थी!) गठरी में पत्थर हैं। एक पत्थर निकाल कर फेंक दो।

किसान ने गठरी जमीन पर पटकी। साधु वहीं खड़े हो गए। उनके देखते-देखते, किसान ने गठरी में से सबसे अधिक वजन का पत्थर छाँटकर फेंक दिया। साधु ने किसान से दोबारा गठरी बाँधने को कहा। फिर साधु तेजी से आगे बढ़ने लगे। कुछ देर बाद किसान साधु के बराबर चलने में असमर्थता अनुभव कर पीछे रहना शुरू हो गया। साधु ने कहा - भक्त! क्या अब भी बोझ अनुभव कर रहे हो? भक्त बोला - महात्मा जी बोझ तो है ही!

साधु ने कहा - बोझ अनुभव हो रहा है तो चिन्ता क्यों करते हो! एक पत्थर और फेंक दो और हल्के हो जाओ। किसान ने वैसा ही किया। मंजिल कहाँ तक तय करनी है, साधु ने कुछ भी किसान भक्त को नहीं बताया था।

दोनों चलते रहे, चलते रहे। कुछ दूर चलने पर वह वजन की फिर शिकायत करने लगा। बड़े-बड़े पाँच पत्थर बँधे हुए थे गठरी में, धीरे-धीरे सभी पत्थर भक्त की शिकायत करने पर साधु ने फिंकवा दिये।

जब भक्त के पास कुछ भी नहीं रहा, वजन के नाम पर तो वह साधु के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगा। साधु ने पूछा - भक्त अब तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं है?

भक्त बोला- महात्मा जी! अब किस बात का कष्ट है? अब तो मैं एकदम प्रसन्न पुलकित और स्वतंत्र हूँ। चले चलो, अब जितना चलना हो, जहाँ पहुँचना हो, किसी तरह की कठिनाई नहीं होगी।

संत ने जंगल में दिशाहीन किसान भक्त को इतने समय तक दौड़ाते रहने का रहस्य बताते हुए कहा - भक्त! परमात्म-दर्शन कर लेने की योग्यता तुझमें अभी प्रकट नहीं हो पाई है। जिस प्रकार पत्थरों की गठरी को उठाकर चल पाना तुम्हारे लिए कठिन था, जब एक-एक कर तुमने पत्थरों का भार फेंक दिया तब मन और तन, दोनों ही भार मुक्त हो गए। इसी प्रकार जब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के पत्थरों को फेंककर निर्भार हो जाओगे, उसी दिन इन पत्थरों में दबा परमात्मा तुम्हारे लिए सुलभ हो जाएगा। उसी दिन अन्दर में जी रहा प्रकाश दीप तुम्हारे जीवन-पथ को आलोकित कर देगा। वह क्षण ही, परमात्म-दर्शन का क्षण होगा।

क्या जैन समाज सचमुच अमीर है?

- महावीर सांगलीकर

जैन समाज यह एक अमीर समाज है, ऐसा माना जाता है। कुछ जैन लोग तो दावा करते हैं कि भारत का 75% इनकम टैक्स जैन समाज से आता है, लेकिन वास्तव में दूसरे समाजों से वह कोसों पीछे है। जरा आप भारत के सबसे अमीर 100 या 500 व्यक्तियों की लिस्ट देखे, आपको पता चलेगा कि अभी तक भारत का सबसे अमीर व्यक्ती एकबार भी जैन समाज से नही हुआ। पहले दस अमीर व्यक्तियों में कभी कभार केवल एक जैन व्यक्ति होता है, वह भी 7वे स्थान के आगे। पहले 100 अमीर व्यक्तियों मे 8-10 जैन लोग होते हैं। इसके उल्टे पहले दस लोगों में आपको हमेशा 2 पारसी और 3 अजैन अग्रवाल दिखाई देंगे।

> किसी भी समाज की अमीरी उस समाज में पैसे वाले लोग कितने है इस बात पर नापी नहीं जाती, बल्कि उस समाज में बुद्धिजीवी, विचारक, सायंटिस्ट, प्रोफेसर, लेखक, समाज सुधारक, पत्रकार, खिलाड़ी, कलाकार, गायक, राजकीय नेता जैसे लोगों की संख्या क्या है?

दूसरी बात यह है कि किसी भी समाज की अमीरी उस समाज में पैसे वाले लोग कितने है इस बात पर नापी नहीं जाती, बल्कि उस समाज में बुद्धिजीवी, विचारक, सायंटिस्ट, प्रोफेसर, लेखक, समाज सुधारक, पत्रकार, खिलाड़ी, कलाकार, गायक, राजकीय नेता जैसे लोगों की संख्या क्या है? इस बात पर नापी जाती है। इस नजर से हम जब जैन समाज की ओर देखते है तो जैनियों से ज्यादा गरीब इस दुनिया में कोई नहीं है यह बात साफ दिखाई देती है।

सोचने की बात यह है कि पारसी और अजैन अग्रवाल लोग, जो संख्या में जैनियों से काफी कम है, जीवन के हर क्षेत्र में आगे हैं। पारसियों की संख्या तो जैनियो के 1 फीसदी भी नहीं, फिर भी उनकी अमीरी के आगे जैनियों का कोई अस्तित्व ही नही है। जैन समाज बडा दानशूर है, ऐसा डंका हमेशा पीटा जाता है, लेकिन पारसी लोग जो दान देते है, उसके आगे जैनियों का दान कुछ मायने नहीं रखता। पारसियों का दान अस्पताल, स्कूल, कॉलेजे, शोध संस्थाएं, स्कॉलरशिप्स जैसी बातों के लिये होता है, जबकि जैनियों का दान मंदिर, प्रतिष्ठाएं, उत्सव, चातुर्मास जैसी बातों में जाता है। कुछ अपवाद है, लेकिन इसकी तुलना पारसियों से नहीं की जा सकती।

यह बडे शर्म की बात है कि जैन समाज की पहचान दुकानदारी, मनी लॉन्ड्रिंग/साहुकारी, सट्टा बाजार, शेयर दलाली आदि जैसी बातों से होती है। अगर जैन समाज को सचमुच अमीर बनाना है, तो सबसे पहले उन्हे ऐसे अनुत्पादक धंधो से दूर रहना होगा। वैसे भी एजेंट लोग कभी भी सबसे अमीर नहीं बनते, ना ही उन्हे पूरे समाज में बुद्धिजीवियों जितना सम्मान मिलता है। (जैन समाज के लोग, खासकर मुनी लोग उन्हे सम्मान देंगे, क्योंकि इस समाज में महानता पैसे पर नापी जाती है।)

खुशी की बात है कि पिछले कुछ सालों से जैन समाज में इस दिशा में धीरे धीरे बदलाव आ रहा है। समाज में डॉक्टर, सी.ए., वकील, इंजिनीयर, प्रशासनिक अधिकारी जैसे लोगों की संख्या बढ़ रही है। अब जैन समाज को इस दिशा में कदम उठाने चाहिये कि समाज से सायंटिस्ट, विचारक, लेखक, पत्रकार, खिलाड़ी, कलाकार, गायक आदि भी बड़ी संख्या में उपजे, तभी जैन समाज खुद को अमीर कहलवाने का हकदार बनेगा।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

इसलिए स्पष्ट नीति यह होनी चाहिए कि स्थानकवासी जैन समाज अपनी पांडुलिपि-संपदा का संरक्षण स्वयं के प्रयासों से सुनिश्चित करें और साथ ही भारत सरकार की योजनाओं का लाभ सक्रिय सहभागिता के माध्यम से प्राप्त करें। आत्मनिर्भरता और सरकारी सहयोग-इन दोनों का संतुलित समन्वय ही भविष्य का मार्ग है।

इस दिशा में आपको सूचित करते हुए मेरे लिए अत्यधिक प्रसन्नता एवं अत्यंत गर्व का विषय है कि आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज के पूर्ण संरक्षण एवं आशीर्वाद से जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक परंपरा के वरिष्ठ आचार्यगण तथा पांडुलिपि विशेषज्ञों के सहयोग द्वारा विश्व में प्रथम बार स्थानकवासी जैन परंपरा के पाँच प्रमुख शास्त्र भंडारों की लगभग 10,000 पांडुलिपियों का डेटाबेस तैयार किया जा चुका है तथा उनके लगभग 6 लाख पृष्ठों का डिजिटलीकरण का बहुत विशिष्ट कार्य चार वर्षों की सतत् साधना और परिश्रम के उपरांत संपन्न हो चुका है। इन प्रमुख भंडारों में-

1. शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत
2. मुनिश्री फूलचंद्र जैन शास्त्र भंडार, गुरुग्राम
3. आचार्य श्री सोहनलाल जैन शास्त्र भंडार, अमृतसर
4. आचार्य श्री आत्माराम जैन शास्त्र भंडार, लुधियाना
5. महाप्राण मुनि श्री मायाराम जैन शास्त्र भंडार, पीतमपुरा (दिल्ली) की पांडुलिपियाँ अब डिजिटल रूप में संरक्षित होकर विश्व के सामने स्थानकवासी जैन समाज के प्रथम बार पाँच सूची पत्रों के माध्यम से प्रकाशित होने वाली है।

एक समय था कि जब स्थानकवासी जैन परंपरा से अलग जैन समाज की अन्य परंपरा के विद्वान स्थानकवासी जैन साधु साध्वियों को कठोर क्रिया पालन करने वाले ढूंढीया, अनपढ़ या केवल भजन गाने वाले साधु समूह के रूप में ही बताते रहे, परंतु स्थानकवासी जैन समाज के हमारे महान पूर्वज आचार्य परंपरा व विद्वान साधु-साध्वियों ने अपनी प्रतिभा एवं साहित्य-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी लेखनी चलाई और पांडुलिपियों के माध्यम से आज तक वह स्थानकवासी समाज के पास कुछ स्थानों पर सुरक्षित है। जिसको अभी तक मैं स्वयं अपने व्यक्तिगत पिछले 32 वर्षों के लगातार प्रयत्नों से संरक्षित करने का प्रयास कर रहा हूँ, उसके परिणाम स्वरूप यह उपलब्धि केवल एक परियोजना का समापन बिंदु नहीं, बल्कि स्थानकवासी जैन समाज की क्षमता, जागरूकता और भविष्यदृष्टि का प्रमाण है।

अब आवश्यकता है कि इस कार्य को अमृत महोत्सव वर्ष में एक राष्ट्रीय अभियान का रूप दिया जाए-जिसमें डिजिटल संग्रह का लोकार्पण, प्रदर्शनी, संगोष्ठियाँ, शोध प्रकाशन और युवा प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्मिलित हों।

आज समय की पुकार है कि हम अपनी इस धरोहर को केवल सुरक्षित ही न रखें, बल्कि उसे जीवंत, सुलभ और प्रासंगिक बनाएं। यदि स्थानकवासी जैन समाज अपनी पांडुलिपि-संपदा के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाता है, तो यह न केवल हमारे समाज के लिए, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना के लिए एक नई दिशा निर्धारित करेगा।

अमृत महोत्सव का यह वर्ष तभी सार्थक होगा, जब हम अपनी स्थानकवासी जैन धर्म परंपरा के अतीत की इस अमूल्य निधि को भविष्य की शक्ति में रूपांतरित कर सकें।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR TIRUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 16

रक्षक भाव-सुरक्षा से असुरक्षा तक (गहन विस्तार)

कर्ताभाव से नियंता भाव जन्म लेता है और नियंता भाव से एक और सूक्ष्म अवस्था उत्पन्न होती है-रक्षक भाव। रक्षक भाव प्रारंभ में प्रेम जैसा दिखाई देता है। परंतु जब उसमें भय प्रवेश कर जाता है, तो वही रक्षण असुरक्षा का कारण बन जाता है। यह अध्याय उसी सूक्ष्म परिवर्तन को समझने का प्रयास है।

1. रक्षक भाव का स्वाभाविक रूप : जीवन में संरक्षण आवश्यक है। माता-पिता बच्चों की रक्षा करते हैं। नेता संगठन की रक्षा करता है। व्यक्ति अपने परिवार, प्रतिष्ठा और कार्य की रक्षा करता है। यह स्वाभाविक है। परंतु जब संरक्षण में सजगता न हो, तो वह नियंत्रण और भय में बदल सकता है।

2. प्रेम से भय तक : प्रेम का स्वभाव खुलापन है। भय का स्वभाव पकड़ है। जब व्यक्ति किसी को प्रेम करता है, तो स्वाभाविक रूप से उसकी भलाई चाहता है। परंतु यदि भीतर असुरक्षा हो, तो वह प्रेम नियंत्रण में बदल जाता है। 'मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता।', 'मैं तुम्हें गलती करने नहीं दूँगा।', 'मैं तुम्हें सुरक्षित रखूँगा।' यहाँ प्रेम नहीं, भय बोल रहा होता है।

3. रक्षक भाव और असुरक्षा : रक्षक भाव की जड़ में अक्सर अपनी असुरक्षा छिपी होती है। व्यक्ति सोचता है-'यदि यह टूट गया तो?' 'यदि यह छूट गया तो?', 'यदि यह बदल गया तो?', यह भविष्य-भय रक्षण को कठोर बना देता है। जहाँ पकड़ है, वहाँ तनाव है।

4. संबंधों में रक्षक भाव : रक्षक भाव संबंधों को दमित कर सकता है। जब व्यक्ति दूसरों को अपनी परिभाषा में बाँधना चाहता है, तो स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। बच्चों को हर निर्णय में रोकना, साथी को स्वतंत्र न छोड़ना, सहकर्मियों को विश्वास न देना-ये सब रक्षक भाव के संकेत हो सकते हैं।

5. रक्षक भाव और शरीर : रक्षक भाव का शारीरिक केंद्र अक्सर नाभि में होता है। नाभि अस्तित्व का गुरुत्व केंद्र है। जब असुरक्षा सक्रिय होती है, तो नाभि में तनाव अनुभव होता है। श्वास पेट तक नहीं जाती। छाती भारी लगती है। यह संकेत है कि भीतर पकड़ है।

6. त्याग का भ्रम : कभी व्यक्ति कहता है- 'मैं सबकी भलाई के लिए कर रहा हूँ।' पर भीतर देखें तो वह स्वयं को अपरिहार्य मान रहा होता है। यदि उसकी भूमिका कम हो जाए, तो उसे असुरक्षा महसूस होती है। यह त्याग नहीं-पहचान की रक्षा है।

7. सुरक्षा और विश्वास का अंतर : सुरक्षा बाहरी व्यवस्था से आती है। विश्वास भीतर की स्थिरता से। रक्षक भाव सुरक्षा चाहता है। सजगता विश्वास को जन्म देती है। जब विश्वास हो, तो पकड़ ढीली होती है। जब पकड़ ढीली होती है, तो संबंध जीवित रहते हैं।

8. रक्षक से साक्षी तक : क्या रक्षण छोड़ देना चाहिए? नहीं। परंतु रक्षण का स्वरूप बदलना चाहिए। 'मैं तुम्हें बचाऊँ' से 'मैं तुम्हारे साथ उपस्थित रहूँ' तक। यह परिवर्तन असुरक्षा को विश्वास में बदल देता है।

9. आत्म-जांच : स्वयं से पूछें-क्या मैं प्रेम से कर रहा हूँ? या भय से? क्या मैं सुरक्षा दे रहा हूँ? या स्वतंत्रता छीन रहा हूँ? क्या मैं सहारा हूँ? या नियंत्रण? ये प्रश्न रक्षक भाव की परतें खोल देते हैं।

10. अंतिम स्पष्टता : रक्षक भाव प्रेम का रूप हो सकता है, पर भय से मिश्रित होकर वह असुरक्षा का स्रोत बन जाता है। जहाँ भय है, वहाँ प्रमाद है। जहाँ विश्वास है, वहाँ सजगता है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-ज्ञाता भाव कैसे आध्यात्मिक पथ पर सबसे सूक्ष्म प्रमाद बन सकता है।

❀❀❀

(क्रमशः)

25वें दीक्षा रजत वर्ष पर विशेष...

संयम पथ का देदीप्यमान नक्षत्र : श्रद्धेय उपप्रवर्तक श्री श्रुतमुनि जी म.सा.

– गौतमचंद दुग्गड़ जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य

जैन धर्म में 'दीक्षा' केवल एक क्रिया नहीं, बल्कि आत्मा का परमात्मा की ओर प्रस्थान है। जब कोई साधक संसार की मोह-माया को त्यागकर आत्म-कल्याण के पथ पर कदम बढ़ाता है, तो वह न केवल स्वयं को तारता है, बल्कि संपूर्ण समाज के लिए प्रकाशपुंज बन जाता है। कर्नाटक गौरव, महाराष्ट्र भूषण, उपप्रवर्तक परम श्रद्धेय श्री श्रुतमुनि जी म.सा. एक ऐसे ही तेजस्वी संत हैं, जिनके संयम जीवन के 13 वर्ष पूर्ण होकर 14वें स्वर्णिम 'रजत वर्ष' का मंगलारंभ हो रहा है।

जन्म एवं वैराग्य की पृष्ठभूमि : पूज्य गुरुदेव का जन्म 4 अक्टूबर 1981 को महाराष्ट्र के सेलू नगर में हुआ। सांसारिक अवस्था में आपका नाम श्री महावीर जी लोढ़ा था। पिता श्री सुभाष जी लोढ़ा और माता श्रीमती कंचनबाई जी के संस्कारों ने आपके भीतर धर्म के बीज बोए। युवावस्था की दहलीज पर, जहाँ संसार के आकर्षण अपनी ओर खींचते हैं, वहीं पूज्य महासती प्रवर्तीनी श्री प्रभाकंवर जी म. व श्रद्धेय श्री प्रकाशकंवर जी महारासा की पावन प्रेरणा से आपके भीतर वैराग्य की धारा प्रवाहित हुई। आत्म-कल्याण की तीव्र भावना ने आपको सांसारिक सुखों से विमुख कर संयम की ओर मोड़ दिया।

दीक्षा एवं गुरु परंपरा : भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। श्री श्रुतमुनि जी म. को कर्नाटक गजकेसरी पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी महाराज की गुरु-परंपरा का गौरव प्राप्त है। आप दक्षिण केसरी पूज्य गुरुदेव श्री मिश्रीलाल जी महाराज के सुशिष्य हैं। 15 मई 2002, अक्षय तृतीया के उस ऐतिहासिक दिन, तपोधाम जालना (महाराष्ट्र) में महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पू. श्री प्रभाकंवर जी महाराज के मुखारविंद से आपने दीक्षा अंगीकार की और महावीर से 'श्रुतमुनि' बन गए।

साधना, विहार और धर्म प्रभावना : दीक्षा के उपरांत पिछले 24 वर्षों का आपका सफर कठोर तप, स्वाध्याय और पद-विहार का रहा है। आपने मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे विभिन्न राज्यों में हजारों मील की पदयात्रा की। आपके प्रवचन 'प्रवचन दक्ष' की उपाधि को चरितार्थ करते हैं। आपकी ओजस्वी वाणी और सरल व्याख्या शैली ने न केवल वृद्धों, बल्कि आधुनिक युवाओं को भी धर्म से जोड़ा है।

आपकी पावन निश्रा में श्री अक्षरमुनि जी, श्री अबीरमुनि जी, श्री मधुरमुनि जी एवं श्री सुधीरमुनि जी सहित अनेक साधु-साध्वियों ने दीक्षा ग्रहण की, जो आपकी सुदृढ़ शिष्य परंपरा और शासन के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

व्यक्तित्व की अनुपम आभा : गुरुदेव के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सहज मुस्कान और सरल स्वभाव है। आगमों के गहन ज्ञाता होने के बावजूद आपमें किंचित मात्र भी अहंकार नहीं है। आपकी वाणी में मिश्री जैसी मिठास है, जो अशांत मन को शांति प्रदान करती है। समाज सेवा के प्रति आपका दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक है, जिसकी परिणति आपकी प्रेरणा से स्थापित विभिन्न परमार्थ संस्थाओं और संगठनों के रूप में देखी जा सकती है।

अभिनंदन एवं मंगल कामना : आज जब आप अपने संयम जीवन के 14वें वर्ष (रजत वर्ष) में प्रवेश कर रहे हैं, संपूर्ण जैन समाज और 'गणेश मिश्री भक्त परिवार' हर्षोल्लासित है। आप श्रमण संघ के वे नक्षत्र हैं, जिनकी आभा से मानवता का पथ आलोकित हो रहा है।

हम भगवान महावीर के चरणों में यही मंगल कामना करते हैं कि पूज्य गुरुदेव का स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहे, वे दीर्घायु हों और उनका मार्गदर्शन हमें निरंतर प्राप्त होता रहे। आपके संयम की सुगंध युगों-युगों तक इस धरा को महकाती रहे। श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों में अनंत-अनंत वंदन!

'जैन' जनगणना में अवश्य शामिल हो

जनगणना 2027 जैन समुदाय के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। यह केवल संख्या का विषय नहीं है - यह जैन धर्म की स्वतंत्र पहचान, उसकी सांस्कृतिक विरासत और आने वाली पीढ़ियों के अधिकारों की सुरक्षा का विषय है। जैन समुदाय की वास्तविक संख्या उससे कहीं अधिक है जितनी अब तक की जनगणनाओं में दर्ज हुई है। यह अवसर है कि हर जैन परिवार अपनी धार्मिक पहचान के साथ इस जनगणना में सम्मिलित हो, ताकि जैन धर्म की सही और गरिमापूर्ण उपस्थिति राष्ट्रीय आँकड़ों में परिलक्षित हो सके।

जैन जनगणना का उद्देश्य भारत में जैन समुदाय की वास्तविक जनसंख्या, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का सटीक डेटा एकत्र करना है, क्योंकि 2011 की जनगणना (45 लाख) के मुकाबले वास्तविक संख्या अधिक मानी जाती है। 2027 की आगामी जनगणना में जैनियों से 'धर्म' के कॉलम में 'जैन' ही अंकित करने की अपील है ताकि उनकी सही पहचान संरक्षित रहे।

जैन जनगणना का मुख्य उद्देश्य समुदाय की सही ताकत को सामने लाना है, क्योंकि 2011 के अनुसार जैन आबादी कुल भारत का मात्र 0.4% (लगभग 45 लाख) थी। 2027 की जनगणना में एक भी जैन परिवार न छूटे, इसके लिए आप अपने क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाए, जिसमें 'दिगंबर', 'श्वेताम्बर', 'तेरापंथी' आदि को संप्रदाय के रूप में न कि जाति के रूप में और अपनी विशिष्ट जाति को सही से भरने की सलाह दें। यह अध्ययन सामाजिक-आर्थिक विकास की योजना बनाने, पूजा स्थलों के संरक्षण और सामुदायिक आवश्यकताओं की योजना बनाने के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। जैन समुदाय को अपनी पहचान को लेकर भ्रमित न होने और सरकारी आंकड़ों में सही जानकारी (जैन) भरने के लिए प्रेरित होना होगा।

प्रस्तुति : विपुल जैन (राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष)

(सोशल मीडिया से साभार)

यह सामान्य गर्मी नहीं, 'एल नीनो' के खतरे का आगमन

हम इस समय जो महसूस कर रहे हैं, वह सामान्य गर्मी नहीं है। यह 'एल नीनो' के खतरे का आगमन है, जो चुपचाप लोगों की जान ले सकता है और हमारे अपनों को हमसे दूर कर सकता है। मई के महीने के करीब आते-आते यह स्थिति और गंभीर हो सकती है।

'एल नीनो' क्या है?

सरल भाषा में कहें तो, प्रशांत महासागर (Pacific Ocean) का पानी बहुत गर्म हो जाता है। इससे दुनिया भर में हवा के बहाव में बदलाव आता है। दक्षिण-पश्चिम मानसून, जो मई में बारिश लाता है, इस बार देर से आ सकता है या कम हो सकता है। इसका मतलब है कि जब बारिश होनी चाहिए, तब भीषण गर्मी पड़ेगी।

यह स्थिति बहुत खतरनाक है। हीट स्ट्रोक के कारण स्वस्थ व्यक्ति की भी मृत्यु हो सकती है। इसलिए अपनी जान बचाने के लिए हमें तुरंत निम्नलिखित उपाय करने चाहिए।

प्यास लगने का इंतजार न करें - यह खतरनाक है।

प्यास लगना इस बात का संकेत है कि शरीर पहले ही डिहाइड्रेट हो चुका है। हर घंटे पानी पिएं। बच्चों और बुजुर्गों को भी पानी पिलाते रहें। हमेशा अपने पास पानी की बोतल रखें।

सबसे खतरनाक समय : सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक। इस समय सूरज की किरणें सीधे शरीर पर पड़ती हैं।

जितना हो सके घर के अंदर रहें। स्कूल के खेल कार्यक्रमों के बारे में सोच-समझकर निर्णय लें, आपके बच्चे की जान किसी भी मेडल से ज्यादा कीमती है। काले कपड़े पहनने से बचें, ये ज्यादा गर्मी सोखते हैं। हल्के रंग के सूती कपड़े जैसे सफेद या गुलाबी पहनें।

हीट स्ट्रोक के लक्षण : तेज सिरदर्द, बेहोशी, उल्टी, सूखी त्वचा (पसीना नहीं आना) यदि ये लक्षण दिखाई दें तो तुरंत व्यक्ति को छांव में ले जाएं, गीले कपड़े से शरीर पोंछें और तुरंत अस्पताल लेकर जाएं।

पक्षियों को न भूलें : घर के बाहर या दीवार के पास पानी रखें, उनके लिए छाया की व्यवस्था करें। आने वाली 'एल नीनो' स्थिति का सामना करने के लिए हम सभी को तैयार रहना होगा। याद रखें, हम तभी इस खतरे से बच सकते हैं जब हम सुरक्षित रहें।

प्रस्तुति : संतोष जैन (राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा)

(सोशल मीडिया से साभार)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जीवदया को आत्मसात करना ही मानव जीवन की सार्थकता

जावरा (मध्य प्रदेश) : जैन सोशल ग्रुप इंटरनेशनल फेडरेशन नेचुरोथेरेपि कमेटी के सदस्यों द्वारा गर्मी व उमस के मौसम में जावरा की गौशाला में जीवदया हेतु हरा चारा आदि का खाद्य सामग्री पशुओं का खिलाकर जीवदया के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया।

इस अवसर पर जवरा जैन सोशल ग्रुप इंटरनेशनल के पदाधिकारियों के साथ बहुत से युवा व महिला कार्यकर्ताएं भी शामिल थी।

प्रेषक : संदीप रांका जैन

मुमुक्षु अंजु बनी जैन साध्वी राज राजवी जी महाराज

श्रमण संघीय मरुधर केसरी साध्वी परिवार में नवदीक्षित साध्वी श्री राज राजवी जी म.
हार्दिक अनुमोदना एवं अभिनंदन अक्षय तृतीया, 19 अप्रैल 2026 रणावास राजस्थान

जयपुर (राजस्थान) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन शिक्षण संघ, श्री मरुधर केसरी शिक्षा समिति एवं श्री जैन संघ के तत्वावधान में श्री मरुधर केसरी वर्षीतप पारणा एवं दीक्षा समिति द्वारा आयोजित त्रिवेणी महामहोत्सव के दौरान गुरु मरुधर केसरी की 108वीं दीक्षा जयंती तथा मुमुक्षु अंजु जैन भागवती दीक्षा एवं वर्षीतप आराधकों के पारणे का भव्य आयोजन हुआ। पूज्य प्रवर्तक श्री सुकनमल जी म., उप-प्रवर्तक गुरुदेव श्री अमृतमुनि जी म. ने उपस्थित संघों की साक्षी से एवं जन्मदाता इन्द्रसिंह नोरत कंवर, धर्म परिवार नोरतमल सूरजकंवर गुंदेचा की आज्ञा से दीक्षा विधि एवं संस्कार प्रदान कर सुश्री अंजु को सामायिक चारित्र में प्रवेश करवाया। आयोजन के लाभार्थी परिवारों, वर्षीतप आराधकों, अतिथियों का समिति की ओर से अभिनंदन किया गया। नवदीक्षिता की बड़ी दीक्षा श्री जैन संघ बोरनडी ग्राम में करवाने हेतु जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दिनेश जी भलगट जैन, श्री इंदरचंद मरलेचा जैन, श्री भंवरलाल मरलेचा जैन, श्री प्रकाशचंद मरलेचा जैन ने पुरजोर विनती की।

प्रेषक : गौतमचंद जैन गुगलिया

मेरी भावना पाठ्यक्रम में शामिल

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए कक्षा 7 में हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'भाषा भारती' में प्रथम अध्याय के रूप में 'मेरी भावना' कविता को सम्मिलित किया गया है। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से मध्य प्रदेश शासन को हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं!

व्हाट्सऐप बनाम व्यावहारिकता

एक श्रावकजी मोबाइल देख रहे थे, मैं पास ही बैठा था, उनके व्हाट्सऐप पर कहीं का आमंत्रण आया हुआ था, मैंने कहा - हुकम, कब पधार रहे आमंत्रित अवसर पर, वे बोले-कोई खास कार्य अवसर हो तो बात अलग है, बाकी व्हाट्सऐप पर आमंत्रण केवल व्यवहार निभाने के लिए आता है, बुलाने का आमंत्रण अलग होता है। मान गया उनकी बात।

- ओम समदर्शी

NAMOKAR METALS

S.K. Jain

Deals in: Ferrous Non Ferrous & All Kinds of Industrial Scrap

अंकुर जैन
राष्ट्रीय युवा चेयरमैन
जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

Plot No.-5, SarurPur Ind. Area.
Nangla gujran, Near Nagar chowk, Faridabad
E-mail : namokarmetals@gmail.com Mobile : 9811601241

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

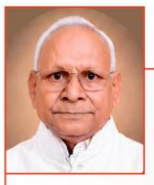

सुश्रावक श्रीमान् सुभाषचंद जैन का संथारा स्वर्गवास

नरेला, दिल्ली : एस.एस. जैन सभा, नरेला मण्डी के प्रधान श्री सुभाषचंद जैन सुपुत्र लाला रतनलल जैन का संथारा सहित दिनांक 24 अप्रैल को देवलोक गमन हो गया। आपके सुपुत्र जैन कॉन्फ्रेंस परिवार से जुड़कर तन-मन-धन से अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। आप उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. के परम भक्त थे। आप साधु-साध्वियों के प्रति नतमस्तक थे तथा उनके आहार-विहार की सेवा का लाभ लेते रहे। आपके चले जाने से समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है।

सुश्रावक श्री श्रेणिकराज जी बालेचा जैन का निधन

चेन्नई (तमिलनाडु) : धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री श्रेणिकराज बालेचा जैन नेहरू बाजार, चेन्नई मरूधर में कुशालपुरा का दुःखद देहावसान दिनांक 24.04.2026 को हो गया। आप जैन कॉन्फ्रेंस तमिलनाडु युवा शाखा चेयरमैन और सक्रिय कार्यकर्ता श्री आनन्द बालेचा जैन के पिताश्री थे। आपका समस्त परिवार पूज्य गुरु भगवंतों की सेवा में अग्रणी है।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रीनगर के लाल चौक पर महामंत्र नवकार का किया जाप

दिल्ली : 26 अप्रैल 2026 को जम्मू-कश्मीर की यात्रा के दौरान श्रीनगर के लाल चौक पर जैन समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों के प्रतिनिधि मण्डल ने महामंत्र नवकार का जाप किया।

इस अवसर पर बीजेपी कश्मीर के उपाध्यक्ष श्री सोफी युसूफ सहित राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जय कुमार जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जैन, उपाध्यक्षा श्रीमती वीणा जैन, वरिष्ठ मार्गदर्शिका श्रीमती सुमित्रा जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के अन्य पदाधिकारी गण, जैन हरियाणा परिवार के अध्यक्ष श्री नरेश गोल्डन, संस्थापक श्री राजेंद्र बब्बल, महामंत्री श्री प्रदीप जी, श्री सुरेश कुमार जैन 'रिण्ढाना' - कोषाध्यक्ष जैन हरियाणा परिवार तथा अन्य पदाधिकारी गण उपस्थित रहे।

वहीं इस अवसर पर भगवान महावीर स्वामी की जय के उद्घोष के साथ सभी पूज्य आचार्य भगवंतों का जयकारा भी लगाया।

नारी शक्ति स्वरूपा अलंकरण से अलंकृत

उदयपुर (राजस्थान) : अक्षय तृतीया पर जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा खोखावत जैन व राष्ट्रीय मंत्री अंजु चपलोत को नारी शक्ति स्वरूपा अलंकरण से अलंकृत किया गया। डॉ. पुष्पा खोखावत जैन ने बताया कि यह गौरव पूर्ण सम्मान जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा का सम्मान है। यह हमारे मानवता की सेवा व संत-सतियों के आशीर्वाद स्वरूप समाज ने प्रदान किया है, उसके लिए फतहनगर श्रीसंघ को बहुत-बहुत धन्यवाद। वर्षीतप पारणोत्सव पर फतहनगर में 121 वर्षीतप तपस्वियों का पारणा हुआ। इस अवसर पर 3000 श्रावक-श्राविका एवं लगभग 20 संत-सतियों की उपस्थिति रही। आदर और सम्मान के साथ पारणोत्सव हुआ और सभी संत-सतियों के प्रवचन व मंगल पाठ का लाभ मिला।

डिजिटल आमंत्रण अपनाएं, पंच परमेष्ठी का सम्मान बचाएं

आज के समय में आमंत्रण हेतु ई-कार्ड्स और व्हाट्सऐप जैसे माध्यम तेज, सरल और किफायती विकल्प हैं। इनसे न केवल तुरंत निमंत्रण भेजा जा सकता है, बल्कि कार्यक्रम की पूरी जानकारी लंबे समय तक मोबाइल में सुरक्षित भी रहती है। सबसे महत्वपूर्ण बात इससे कार्यक्रम के पहले और बाद में भी पंच परमेष्ठी की किसी भी प्रकार की अनजाने में होने वाली अवमानना से बचा जा सकता है।

अतः बैनर-पोस्टर छपवाने/लगवाने वाले अति उत्साही सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि धर्म प्रभावना के नाम पर पंच परमेष्ठी की तस्वीरों का उपयोग करने से बचें। अक्सर देखा गया है कि ऐसे पोस्टर, स्टीकर एवं अन्य प्रचार सामग्री कार्यक्रम के बाद नालियों, कचरे या पैरों तले पड़े मिलते हैं, जो अत्यंत अनुचित और दुःखद है। धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा यही है कि हम उसकी मर्यादा और सम्मान बनाए रखें, सुविधा के साथ संवेदना भी जरूरी है।

- जयपुर जैन सभा समिति

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

अहिल्यानगर में वर्षीतप पारणा महोत्सव का आयोजन

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) : राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट पूत्र श्री आनंदऋषिजी म. की पावन उर्जामय भूमि आनंदधाम, अहिल्यानगर में महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषिजी म., प्रबुध्द विचारक पू. श्री आदर्शऋषिजी म., संस्कार दिवाकर पू. श्री आलोकऋषिजी म. आदि संत-सतीवृंद के पावन सान्निध्य में अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर 100 से ज्यादा तपस्वियों का वर्षीतप पारणा महोत्सव संपन्न हुआ। संत-सतियों जी के साथ दीर्घ वर्षीतप तपस्वी और अन्य तपस्वियों के पारणे हुए। जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ जोन प्रांतीय महिला अहिल्यानगर शाखा की ओर से कार्यक्रम के लिए अपनी सेवा-भक्ति आदिनाथ भगवान के श्रीचरणों में अर्पित की।

प्रांतीय महिला अध्यक्षा सौत्र ज्योति नवनीतजी गांधी, प्रमुख मार्गदर्शक सौ. हेमाजी लुणिया, वरिष्ठ उपाध्यक्षा सौ. मधुबालाजी चोरड़िया, मंत्री सौ. शर्मिला बाफना, प्रचार - प्रसार मंत्री सौ. उज्ज्वला लोढ़ा, कार्यकारिणी सदस्या सौ. वैशाली मुथियान, लता गांधी, सुवर्णा बम्बोरी और वर्धमान महिला मंडल की सदस्यों ने सेवा का लाभ लिया।

फतहनगर संघ ने रच दिया तप अनुमोदन का इतिहास

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव में 118 तपस्वियों ने सानंद पारणा किया

फतहनगर (राजस्थान) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, फतहनगर द्वारा 19-20 अप्रैल 2026 को श्री अम्बेश गुरु पावनधाम प्रांगण में श्रमण संघीय पूज्य शिवाचार्यजी के आज्ञानुयायी एवं गुरु अम्बेश सौभाग्य मदन सुशिष्य मेवाड़ भास्कर उपप्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री कोमलमुनिजी 'करूणाकर', कविहृदय श्री हर्षितमुनिजी म. ठाणा-2 एवं गुरुणी प्रेम शिष्या तपज्योति, उपप्रवर्तिनी महासती श्री विजयप्रभाजी म. एवं महासती मंडल के पावन सान्निध्य में आयोजित दो दिवसीय अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव सभी दृष्टियों से सुनहरा इतिहास रचाने वाला रहा। तप अनुमोदकों का सैलाब उमड़ पड़ा।

19 अप्रैल को दिन में सामर परिवार, फतहनगर द्वारा प्रायोजित मेहंदी एवं कोठारी, सेमा, बदामा, सलोदा, वडाला, सेमा, कागरेचा, सेमल, सिंघवी, गंगापुर एवं सिसोदिया, भूताला परिवार द्वारा प्रायोजित चौबीसी (सांझी) कार्यक्रम में पूज्या विजय गुरुणी एवं महासती मंडल के सान्निध्य में सुरीली गायिका निशा हिंगड़ एण्ड म्युजिकल ग्रुप, भीलवाड़ा ने समा बांध दिया।

शाम को चंडालिया परिवार, भूपालसागर द्वारा प्रायोजित भक्ति संध्या में गायक लवेश-हिमांशु बुरड़ एण्ड म्युजिकल ग्रुप, इन्दौर ने शानदार प्रस्तुति दी। उनके द्वारा माता-पिता को समर्पित गीत से माहौल भावुक हो उठा। इस अवसर पर भक्ति संध्या में डिजिटल आकर्षक लक्की ड्रा खोले गए। लक्की ड्रॉ के लाभार्थी श्री धर्मेशजी-रेखाजी नवलखा परिवार उदयपुर का फतहनगर संघ द्वारा अभिनंदन किया गया।

20 अप्रैल को सुबह 9 बजे, फतहनगर संघ पदाधिकारियों ने समारोह स्थल पर पूज्य गुरु गुरुणीजी, वर्षीतप के तपस्वियों का भव्य मंगल प्रवेश करवाया। स्वागताध्यक्ष सेठिया परिवार, सनवाड़-फतहनगर ने सभी तपस्वियों का बहुमान किया। महोत्सव का मंगलाचरण उत्कृष्ट साधिका श्री हर्षश्रीजी, जयश्रीजी म. ने आदिनाथ स्तुति-गुरु अम्बेश सौभाग्य चालीसा से किया तो समूचा वातावरण मंगलमय हो गया। प्रेम बहु मंडल, फतहनगर ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। ध्वजारोहण की रश्म श्री अशोककुमारजी, अंशुलकुमारजी सिंघवी परिवार, गुड़गांव ने अदा की। फतहनगर संघ अध्यक्ष श्री कनक बाफना ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव की ऐतिहासिकता में फतहनगर संघ के साथ, पावनधाम संस्थान, श्री अम्बेश सौभाग्य नवयुवक मंडल, सकल जैन समाज नवयुवक मंडल, श्री चंदनबाला महिला मंडल, प्रेम बहु मंडल, चंदनबाला बालिका मंडल, फतहनगर एवं प्रशासन का पूर्ण सहयोग रहा। इस अवसर पर वर्षीतप के तपस्वियों के तप अनुमोदनार्थ धर्म ज्योति परिषद्, भीलवाड़ा संरक्षक श्री कंवरलालजी सूर्या, अध्यक्ष प्रमोदजी नाबेड़ा, कोषाध्यक्ष नवरत्नमलजी भलावत, श्री पंकजजी सूर्या, श्री शांतिलालजी मेड़तवाल, सम्पादक डॉ. रतनलालजी मारू आदि पधारे। समारोह का सफल संचालन फतहनगर संघ सहमंत्री श्री निलेशजी पोखरना, कवि ओम समदर्शी, उदयपुर ने किया। यह अक्षय तृतीया महोत्सव फतहनगर संघ के इतिहास में सुनहरे पन्नों पर दर्ज हो गया। प्रेषक : ओम समदर्शी

नांगलराय दिल्ली में अक्षय तृतीया कार्यक्रम सम्पन्न

दिल्ली : नांगलराय श्रीसंघ में दिनांक 12/4/2026 को श्रमण संघीय संत पू. गुरुदेव श्री रितेश मुनि जी म., पू. श्री प्रभात मुनि जी म. एवं मधुर गायिका महासाध्वी पू. श्री डालिमा जी म., आगम प्रवचनकार साध्वी पू. श्री परीधि जी म., महासाध्वी पू. श्री सोनम जी म., सेवाभावी साध्वी पू. श्री वाणी जी म. के सान्निध्य में अक्षय तृतीया बहुत ही तप, जप, धर्म अराधना और उत्साह उमंग के साथ कार्यक्रम सहर्ष आनंद से मनाया गया। गुरु भगवंतों के सानिध्य में अनेकों भाई-बहनों ने तपस्या के पारणे करने का लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर दिल्ली के अनेकों क्षेत्र से श्रावक समाज तथा जयपुर (राज.) क्षेत्रों से आए हुए अतिथियों का स्वागत सम्मान श्रीसंघ के श्रीमान प्रधान संभव जैन और श्रीसंघ के वरिष्ठ श्रावकों द्वारा किया गया। महामंत्री उत्तम जैन ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया।

गणेशबाग, बैंगलोर में 75 तपस्वियों का भव्य अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव संपन्न

बैंगलोर (कर्नाटक) : फूलों की नगरी बैंगलोर के शिवाजीनगर स्थित गणेशबाग प्रांगण में सोमवार को अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का मुख्य समारोह हर्षोल्लास और भव्यता के साथ संपन्न हुआ। श्रमण संघ संत प्रवर, वाणी के जादूगर पूज्य गुरुदेव डॉ. समकित मुनि जी म. सा. आदि ठाणा एवं महासाध्वी सत्यप्रभा जी म.सा. आदि विशाल साध्वी मंडल के पावन सान्निध्य में 75 तपस्वियों का इक्षु रस से ऐतिहासिक पारणा करवाया गया। इस अवसर पर शोभायात्रा से हुआ तपस्वियों का स्वागत हुआ तथा श्रमण संघ स्थापना का 75वाँ वर्ष व मरुधर केसरी जी की दीक्षा जयंती मनाई गई और उनके योगदान को स्मरण किया गया। पूज्य गुरुदेव ने सभी तपस्वियों को विधिवत 'आलोचना' कराई। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी बावीस संप्रदाय जैन संघ ट्रस्ट (गणेशबाग) द्वारा आयोजित इस पारणा उत्सव में भाग लेने और तप अनुमोदना करने के लिए केवल बैंगलोर से ही नहीं, बल्कि चेन्नई, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र आदि देश के विभिन्न क्षेत्रों से भारी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे, जिनका श्री संघ द्वारा आत्मीय स्वागत किया गया। समारोह में कई विशिष्ट गणमान्य अतिथियों की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

चेन्नई में बूचड़खाने से 8 गायों को मुक्त कराया

चेन्नई (तमिलनाडु) : संस्कार मंच प्रणेता श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक गुरुदेव श्री सिद्धार्थ मुनि म. की पावन प्रेरणा से संस्कार मंच चेन्नई शाखा के 25वें सिल्वर जुबली वर्ष के पावन अवसर अभयदान प्रोजेक्ट के अन्तर्गत दिनांक 28 अप्रैल को गायो के अभयदान का कार्यक्रम संपन्न किया गया।

इस पुण्य कार्य के चेयरमैन में श्री हस्तीमल लोढ़ा जैन के कुशल नेतृत्व में तिरुवल्लूर के बूचड़खाने से 8 गायों को मुक्त कराकर उन्हें सुल्लुरपेट्टा स्थित गुरु गणेश गोशाला में सुरक्षित रूप से पहुँचाया गया। इस अवसर पर दानदाताओं को धन्यवाद प्रेषित किया गया वहीं इस मौके पर संस्कार मंच के अध्यक्ष देवेंद्र बेताला जैन सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

SS1008
₹1490/-

SM-4
₹1325/-

LP-28
₹875/-

Al-cs-flx-112
₹1490/-

LP-32
₹875/-

SM-5
₹1375/-

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रमाद से प्रमोद' सजग जीवन की साधना का हुआ भव्य विमोचन

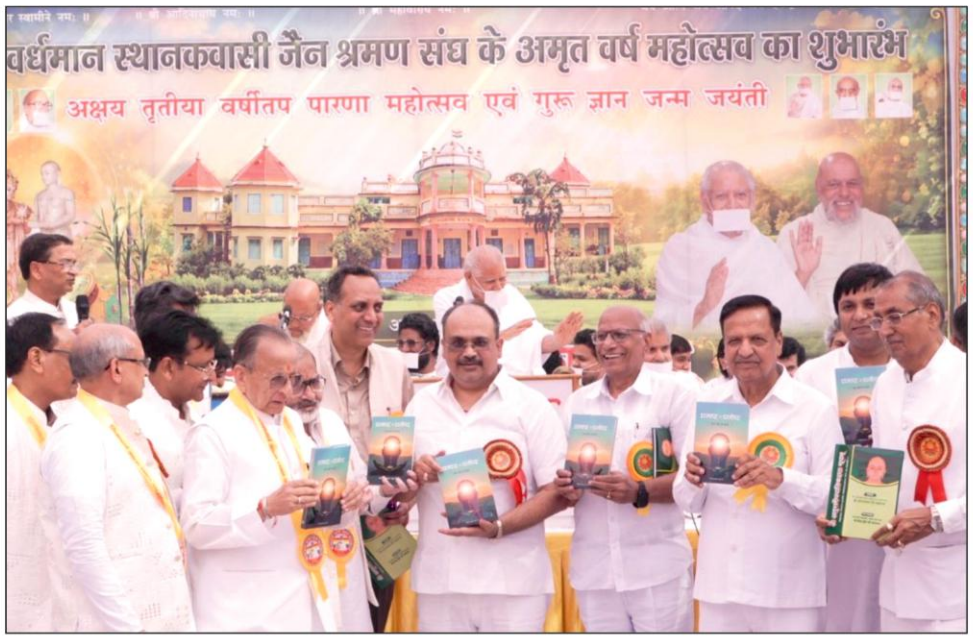

सूरत (गुजरात) : 20 अप्रैल 2026, को अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन तप सूर्य आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। इस अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉफ्रेन्स, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन द्वारा लिखित पुस्तक "प्रमाद से प्रमोद" सजग जीवन की साधना का भव्य विमोचन किया गया। इस सुअवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों में राष्ट्रीय चेयरमैन विश्वस्त मंडल श्री रमेश भंडारी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय पर्यवेक्षक श्री सुभाष ओसवाल जैन, श्रावक समिति के महामंत्री श्री मुन्नालाल जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित कांतिकुमार जैन सहित अनेक वरिष्ठ गणमान्य जन उपस्थित रहे।

प्रेषक : राजेश कुमार मिश्र

उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म. का नोएडा प्रवास

नोएड़ा (उत्तर प्रदेश) : संघ सेतु, उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज आदि ठाणा 30 अप्रैल को जैन स्थानक निकट-कम्युनिटी सेंटर नोएडा पहुँच रहे हैं। विदित हो उपाध्यायश्री जी सूखे-समाधे 10 मई तक रुकने की भावना रखते हैं।

प्रेषक : आर सी जैन

गर्व का क्षण

जैन कॉन्फ्रेंस की वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक रांका जैन को 'भामाशाह' एवं 'राजस्थान गौरव सम्मान'

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री अशोक कुमार, महेंद्र कुमार रांका जैन (महेश पाइप्स एंड हार्डवेयर प्राइवेट लिमिटेड, गढ़ सिवाना बैंगलोर) को उनकी निःस्वार्थ सेवा और उत्कृष्ट योगदान के लिए 'भामाशाह पुरस्कार' तथा 'राजस्थान गौरव' से सम्मानित किया गया है। यह प्रतिष्ठित सम्मान राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय श्री भजनलाल शर्मा के कर-कमलों द्वारा, कर्नाटक के माननीय राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत की गरिमामयी उपस्थिति में लोकभवन, कर्नाटक में प्रदान किया गया। रांका परिवार को इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं। आपकी सेवा भावना हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

उदयपुर में आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्रमुनि जी म. का पुण्य स्मृति दिवस मनाया गया

उदयपुर (राजस्थान) : श्रमण संघीय आचार्य देवेन्द्रमुनि जी म. का 27वाँ स्वर्गारोण 'पुण्य स्मृति' दिवस पूरे भारत में अहिंसा दिवस के रूप में मनाया गया। उदयपुरवासियों के लिए यह दिन इसलिए भी बेहद खास है, क्योंकि आचार्यश्री का जन्म इसी शहर के वर्डिया परिवार में 7 नवंबर 1931 को हुआ था। आचार्यश्री सकल जैन समाज के ऐसे पहले संत हैं, जिनकी स्मृति में राज्य सरकार ने प्रदेश में बूचडखानों के संचालन पर पूर्णतया प्रतिबंध लगाने का आदेश पारित किया है। इस अवसर पर गुरुदेव जिनेन्द्रमुनि जी म., उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी म., प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्रमुनि जी म., डॉ. सुरेन्द्रमुनि जी म. व श्री दीपेश मुनि जी म. के सान्निध्य में 'ओम असिआउसा नमः' का जाप और गौतमप्रसादी का आयोजन किया गया।

नीमच में युवाचार्यश्री जी का मूर्तिपूजक गच्छाधिपति जिन मणिप्रभ सूरिश्वर जी म. से मंगल मिलन

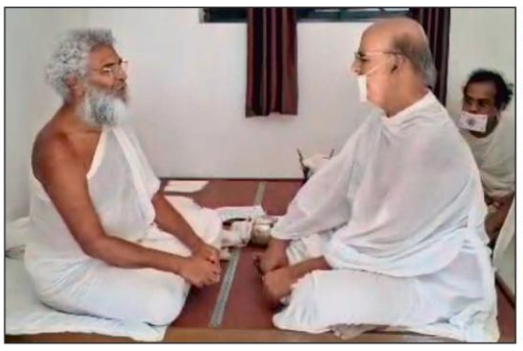

नीमच (मध्य प्रदेश) : 26/04/2026 को नीमच की पावन धरा पर परम पूज्य श्रमण संघ के युवाचार्य श्री महेंद्रऋषिजी म. एवं उनके शिष्य समुदाय का खरतर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी म. के साथ मंगल मिलन हुआ। दोनों महापुरुषों ने जिन शासन की प्रभावना दृष्टि से जैन एकता और समन्वय के अनेक विषयों पर चर्चा वार्ता की।

मेवाड़ की पुण्यधरा पर युवाचार्यश्री का मंगल प्रवेश

मेवाड़ (राजस्थान) : धर्म, सेवा और संस्कारों के प्रेरणास्रोत, श्रमण संघीय युवाचार्य भगवंत श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. आदि ठाणा 4, उपप्रवर्तिनी श्री दिव्यज्योति जी म.सा. 'अर्पणा' आदि ठाणा 6 एवं महासती श्री सुचेता जी म.सा. आदि ठाणा 3 का राजस्थान में मंगलमय शुभागमन मेवाड़ की पुण्यधरा निम्बाहेड़ा में दिनांक 30 अप्रैल 2026, गुरुवार, भव्य मंगल प्रवेश के रूप में सम्पन्न होगा।

युवाचार्य भगवंत की भव्य अगवानी एवं मंगल स्वागत हेतु उप-प्रवर्तक श्री कोमलमुनि जी महाराज मेवाड़ के 752 गांवों का प्रतिनिधित्व करने हेतु इस भीषण गर्मी में लंबे-लंबे विहार करते हुए युवाचार्य भगवंत की भव्य अगवानी एवं मंगल स्वागत के लिए पधार रहे हैं।

प्रेषक : कन्हैयालाल सुराणा, राष्ट्रीय मंत्री

गुरु कस्तूरचंद स्मारक भवन का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर

जावरा (मध्य प्रदेश) : जैन दिवाकरीय श्रमण संघीय उपाध्याय श्री गौतममुनि जी म. की पावन प्रेरणा से श्री गुरु कस्तूर पावन धाम निर्माण के लिए कृत संकल्पित श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जावरा के अंतर्गत पूज्य उपाध्याय गुरु कस्तूर मुनि पावनधाम ट्रस्ट द्वारा निर्माण कार्य गतिमान के साथ प्रथम चरण के अंतर्गत गुरु कस्तूर का स्मारक, मानव सेवा के लिये दो मंजिला हॉल का कार्य पूर्णता की ओर हैं। 17 मई को गुरु कस्तूर पावनधाम प्रथम चरण का उद्घाटन चतुर्विध संघ की उपस्थिति में होगा जिसमें जैन दिवाकरीय श्रमण संघीय आगम ज्ञाता उपाध्याय श्री गौतममुनि जी म., जैन दिवाकरीय श्रमण संघीय बहुश्रुत कवि, आगम मनस्वी प्रवर्तक श्री विजयमुनि जी म., उपप्रवर्तक श्री चंद्रेशमुनि जी म. सेवाभावी वैभवमुनि जी म. आदि ठाणा के साथ श्रमण संघीय अनुष्ठान आराधिका ज्योतिष चंद्रिका शासन प्रभाविका साध्वी डॉ. कुमुदलता जी म., साध्वी डॉ. महाप्रज्ञा जी म., डॉ. साध्वी पदमकीर्ति जी म., साध्वी राजकीर्ति जी म. आदि ठाणा के पावन निश्रा में लोकार्पण होगा। मीटिंग का संचालन सुजानमल कोच्चटा ने किया तथा आभार संजय भंडारी ने व्यक्त किया।

प्रेषक : संदीप रांका जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)

Date of Publication : 01-05-2026
Date of Posting : 07/08-05-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ वर्ष : 70 ✲ अंक : 9
पृष्ठ : 8 ✲ माह : मई ✲ सप्ताह : 01 से 07

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन परंपरा की भूली-बिसरी विरासतें...

बाहवड़ा (भाबड़ा) जैन वंश : उत्पत्ति, इतिहास और पश्चिमी पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) की संस्कृति

बाहवड़ा अथवा भाबड़ा जैन वंश, प्रारंभ से जैन धर्म के श्वेतांबर स्थानकवासी परंपरा से जुड़ा एक महत्वपूर्ण व्यापारी एवं सांस्कृतिक समुदाय है, जिसका प्रमुख केंद्र प्राचीनकाल से अविभाजित पंजाब क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान रहा है। यह समुदाय स्थानकवासी एवं मूर्तिपूजक-दोनों परंपराओं में सक्रिय रहा और समय के साथ एक विशिष्ट सामाजिक पहचान विकसित करता गया।

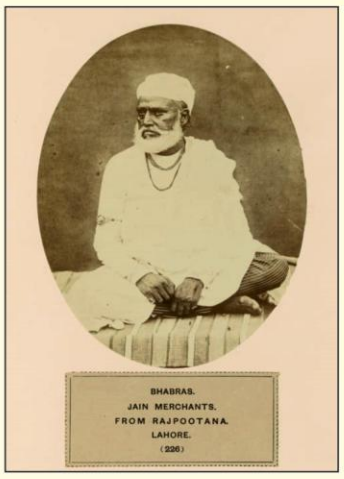

'भाबड़ा-बाहवड़ा' नाम की उत्पत्ति के संबंध में दो प्रमुख मत प्रचलित हैं। एक मत के अनुसार यह शब्द 'भाव-बड़ा' (अर्थात् उच्च आस्था या महान विश्वास) से निकला है। दूसरे मत के अनुसार इसका संबंध लाहौर के दक्षिण स्थित एक प्राचीन गाँव 'भावड़ा' से है, जहाँ करम चंद बच्छावत ने जैन आचार्य जिनकुशलसूरि के चरणचिह्न स्थापित किए थे।

भाबड़ा समुदाय का संबंध प्राचीन भावड़ा/भावदड़ा गच्छ से माना जाता है, जिससे प्रसिद्ध जैन आचार्य कालकाचार्य जुड़े थे। अभिलेखीय प्रमाण बताते हैं कि यह गच्छ लगभग 17वीं शताब्दी तक सक्रिय रहा। पंजाब क्षेत्र में जैन धर्म की उपस्थिति अत्यंत प्राचीन है-यहीं सिकंदर महान ने 'जिम्नोसोफिस्ट' तपस्वियों से संवाद किया और चीनी यात्री ह्वेनसांग ने जैन साधुओं से भेंट की थी।

भाबड़ा समाज मुख्यतः व्यापार, वित्त, शिक्षा और प्रकाशन क्षेत्रों में अग्रणी रहा। भाई गुरदास (16वीं-17वीं शताब्दी) की वाणी में भी भाबड़ों का उल्लेख व्यापारियों एवं सुनारों के रूप में मिलता है। 17वीं शताब्दी में यूरोपीय यात्री सेबास्टियन मैनरिक ने अमृतसर क्षेत्र में इस समुदाय का वर्णन किया है। मुगल काल से लेकर 19वीं शताब्दी तक इनके प्रभाव के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं।

पश्चिमी पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में केंद्र : आज के पाकिस्तान के अनेक नगरों में भाबड़ा जैनों के नाम पर मोहल्ले, बाजार और बाहवड़खाने स्थापित थे, जो आज भी वहाँ मौजूद हैं:-

सियालकोट : 'सराय भाबड़ियां' और 'भाबड़ियां वाला' क्षेत्र
गुजरांवाला : जैन पुस्तकालय (लाला करमचंद भाबड़ा द्वारा संचालित)
लाहौर : 'थड़ी भाबड़ियां' और 'गली भाबड़ियां'
रावलपिंडी : 'भाबड़ा बाजार'
पसरूर : जैन भावड़ा जमींदारों द्वारा विकसित नगर

इन क्षेत्रों में जैन स्थानक, पुस्तकालय जैन साधुओं की प्राचीन समाधियाँ और धर्मशालाएँ समुदाय के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन के केंद्र थे। विभाजन से पूर्व पाकिस्तान के अधिकांश जैन स्थलों का प्रबंधन भाबड़ा जैन समाज के हाथों में था। भाषा, सामाजिक परिवर्तन और अन्य प्रभाव हालाँकि भाबड़ा मूलतः राजस्थान के ओसवाल जैनों से जुड़े माने जाते हैं, परंतु समय के साथ उन्होंने पंजाबी, उर्दू और फारसी भाषाओं को अपनाया और स्थानीय संस्कृति में घुलमिल गए।

विभाजन के बाद पुनर्वास : सन् 1947 के भारत विभाजन के पश्चात अधिकांश भाबड़ा जैन परिवार भारत में आकर लुधियाना, अंबाला, दिल्ली, बड़ौत, मेरठ, कोटा तथा अमृतसर जैसे नगरों में बस गए। अमृतसर में 'कूचा भाबड़ियां' और 'कटरा भाबड़ियां' आज भी उनके ऐतिहासिक अस्तित्व के प्रमाण हैं।

बाहवड़ा (भाबड़ा) जैन वंश पंजाब की समृद्ध जैन विरासत का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उनके द्वारा स्थापित बाहवड़खाने, मोहल्ले और धार्मिक संस्थाएँ न केवल उनके सामाजिक संगठन को दर्शाती हैं, बल्कि जैन धर्म के व्यापक प्रसार और सांस्कृतिक समन्वय की भी सशक्त गवाही देती हैं। आज, भले ही उनका मूल क्षेत्र पाकिस्तान में सीमित रह गया हो, परंतु उनकी ऐतिहासिक पहचान और सांस्कृतिक योगदान भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में स्थायी रूप से अंकित हैं। प्रस्तुति - डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत

(क्रमशः)

जैन गौरव

अमर शहीद मगनलाल ओसवाल

मगनलाल जी ओसवाल का जन्म 1906 ई. में जावरा (म.प्र.) में हुआ था । आपके पिता श्री हीरालाल ओसवाल की मोरसली गली इंदौर में छोटी-सी किराने की दुकान थी। मगनलालजी पिता की इकलौती संतान थे, मिडिल पास ही कर पाये थे। 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन छिड़ा, तब आपकी शादी हो चुकी थी और पिता भी बन चुके थे। परंतु स्वतंत्रता आंदोलन और देशभक्ति में क्या बंधन ? आजादी के दीवाने जगह-जगह भारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए स्वयं बेड़ियाँ पहन रहे थे। जेल की उन्हें परवाह नहीं थी। माताओं की गोद और युवतियों की माँग सूनी हो रही थी।

6 सितम्बर 1942 को इंदौर में एक जुलूस निकला। इसका नेतृत्व श्री पुरुषोत्तमलाल विजय कर रहे थे। जुलूस में हजारों लोग थे, पर जुलूस शांत था। नारे लग रहे थे, जुलूस जब सर्राफा बाजार में पहुँचा तो भारी संख्या में पुलिस आ गई और जुलूस को चारो तरफ से घेर लिया। सभी शांत थे, पर बर्बरता की तो कोई सीमा नहीं, यह सदैव अपना घिनौना और विभत्स चेहरा लिए ही प्रकट होती है। पुलिस ने अत्याचार शुरु किया एक तरफ सभी निहत्थे थे, दूसरी तरफ थी लाठियाँ और गोलियाँ। इंदौर का सर्राफा बाजार सकरा और सँकरी-सँकरी गलियाँ हैं। पुलिस ने दोनों ओर से घेरकर सत्याग्राहियों को इतना पीटा कि बंदूकें भी सहम गई। भीड़ बिखर गई मगनलालजी की जांघ में गोली लगी, पुलिस उन्हें तत्कालीन महाराजा तुकोजीराव अस्पताल ले गई । डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर गोली निकाली, घाव बहुत बड़ा था। कभी भरता कभी रिसता था, लगभग सवा तीन वर्ष बीत गये। 23 दिसम्बर 1945 को आजादी का यह दीवाना देश की आजादी का सपना अपने हृदय में छिपाये हुए वीरगति को प्राप्त हो गया।

श्रमण संघीय जैन पर्व

दिनांक 13 मई : सलाहकार श्री तारकऋषि जी म. - दीक्षा दिवस
दिनांक 17 मई : आचार्य सम्राट् डॉ. शिवमुनि जी म. - दीक्षा दिवस
दिनांक 22 मई : सलाहकार श्री दिनेश मुनि जी म. - जन्म दिवस

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

दिनांक 25 मई : गंगा दशहरा, रोहिणी रवि तप काल प्रारंभ
दिनांक 27 मई : डॉ. इन्द्रचन्द्र शास्त्री जन्म दिवस
दिनांक 31 मई : विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

जैन अल्पसंख्यक छात्रों के लिए छात्रवृत्ति सूचना (2025-26)

राजस्व विभाग, दिल्ली सरकार - 5, शाम नाथ मार्ग, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110 054

शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के लिए दिल्ली के अल्पसंख्यक समुदायों (जैन, बौद्ध, सिख आदि) के छात्रों से छात्रवृत्ति योजनाओं के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। प्रमुख योजनाएं : कक्षा I से XII तक के लिए: दिल्ली के मान्यता प्राप्त पब्लिक/प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले अल्पसंख्यक छात्रों के लिए ट्यूशन फीस की प्रतिपूर्ति (Reimbursement)।

उच्च शिक्षा के लिए : प्रोफेशनल/तकनीकी कॉलेजों, संस्थानों या विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले अल्पसंख्यक छात्रों के लिए 'मेरिट स्कॉलरशिप'। राज्य पुरस्कार : अल्पसंख्यक श्रेणी के टॉपर छात्रों के लिए 'डॉ. बी.आर. अंबेडकर राज्य पुरस्कार'।

आवेदन कैसे करें? ऑनलाइन पोर्टल : आवेदन www.edistrict.delhigovt.nic.in पर किए जा सकते हैं।

अधिक जानकारी : योजनाओं का विवरण और आवेदन के निर्देश विभाग की आधिकारिक वेबसाइट www.revenue.delhi.gov.in पर उपलब्ध हैं। महत्वपूर्ण जानकारी : अंतिम तिथि: आवेदन जमा करने की आखिरी तारीख 30/06/2026 है।

संपर्क : राजस्व विभाग, GNCT दिल्ली। ईमेल: scholarshipbranchminority2023@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की ज्ञान प्रकाश योजना के अंतर्गत प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन

महावीर प्रश्नावली (भाग-5)

प्रश्न 21 : महावीर स्वामी का संहरण देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि से क्यों हुआ?
प्रश्न 22 : भगवान महावीर स्वामी का संहरण करके किसी कुक्षि में रखा गया?
प्रश्न 23 : यह कैसे जाना गया कि भगवान महावीर मातृभक्त थे?
प्रश्न 24 : महावीर स्वामी का जन्म किस राज्य में हुआ था?
प्रश्न 25 : महावीर स्वामी के जन्म के समय देश की राजधानी क्या थी?

नोट : सही उत्तर देने वाले सौभाग्यशाली 4 प्रतिभागियों को रुपये 500/- की नगद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा एवं विजेताओं के नाम एवं प्रश्नों के सही उत्तर प्रत्येक जैन प्रकाश साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे।

प्रायोजक : श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश योजना

उत्तर भेजने हेतु संपर्क सूत्र - श्री नरेन्द्र जैन - राष्ट्रीय मंत्री ज्ञान प्रकाश योजना : 98101 63165

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906